अथ रामनामलेखनव्रतम्

तच्च रामनवमीमारभ्याथवा यस्मिन्कस्मिन्काले कार्यम् ।। आचम्य प्राणानायम्य मासपक्षाद्युल्लिख्य सकलपापक्षयकामो विष्णुलोकप्राप्तिकामो वा श्रीरामप्रीतये रामनामलेखनं करिष्ये इति संकल्प्य लिखितरामनामपूजा नाममंत्रेण षोडशोपचारैः कार्या ।। अथ कथोद्यापनं च——पार्वत्यु वाच ।। धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि कृतार्थास्मि जगत्प्रभो ।। विच्छिन्नो मेऽद्य संदेहग्रन्थिर्भवदनुग्रहात् ।। १ ।। त्वन्मुखाद्गलितं रामकथामृतरसायनम् ।। पिबन्त्या मे मनो देव न तृप्यति भवापहम् ।। २ ।। श्रीरामस्यामृतं नाम श्रुतं संक्षेपतो मया ।। इदानीं श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण स्फुटाक्षरम् ।। ४ ।। श्रीमहादेव उवाच ।। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यतरं महत् ।। प्राप्नोति परमां सिद्धिं दीर्घायुः पुत्रसंपदम्

।। ४ ।। रामनाम लिखेद्यस्तु लक्षकोटिशतावधि ।। एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ।। ५ ।। सकामोऽपि लिखेद्यस्तु निष्कामो वा स पार्वति ।। इहैव सुखमाप्नोति अन्ते च परमं पदम् ।। ६ ।। आदावन्ते च मध्ये च व्रतस्योद्यापनं चरेत् ।। उद्यापनं विनानैव फलसिद्धिमवाप्नुयात् ।। ७ ।। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नाम्न उद्यापनं कुरु ।। पार्वत्युवाच ।। नतास्मि देवदेवेश भक्तानुग्रहकारक ।। ८ ।। नाम्न उद्यापनं ब्रूहि विस्तरेण मम प्रभो ।। श्रीशिव उवाच ।। शृणु देवी प्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथाविधि ।। ९ ।। नाम्न उद्यापानं चात्र भक्त्या भवदनुग्रहाम् ।। सौवर्णीं प्रतिमां कुर्याच्छ्रीरामस्य सलक्ष्मणाम् ।। १० ।। हनूमत्प्रतिमां तत्र चतुर्थांशेन हाटकैः ।। सुवर्णस्य प्रमाणं तु पलाष्टकमुदीरितम् ।। ११ ।। अशक्त श्चेत्पलेनैव तदर्धार्धेन वा पुनः ।। श्रीरामप्रतिमां कुर्वन्वित्तशाठ्यं न कारयेत् ।। १२।। राजतं चासनं कुर्यान्माषैः षोडशसंमितैः ।। पीतवस्त्रेण संवेष्टच स्थापयेत्तण्डुलोपरि ।। १३ ।। तण्डुलानां प्रमाणं तु भवेद्द्रोणचतुष्टयम् ।। शुचौ देशे गृहे तीर्थे मण्डपं कारयेत्सुधीः ।। १४ ।।तोरणानि चतुर्द्वारि बन्धयेदाम्रपल्लवैः ।। भूमौ गोमयलिप्तायां सर्वतोभद्रमण्डलम् ।। १५ ।। रचयेत्सप्तधान्यैश्च नानारङ्गैः सुशोभनम् ।। कुम्भानष्टौ च पूर्वादौ स्थापयेदव्रणाञ्छुभान् ।। १६ ।। कुम्भमेकं मध्यदेशे स्थापयेत्तण्डुलोपरि ।। शुद्धोदकेन संपूर्य पञ्चरत्नैः सपल्लवैः ।।१७ ।। नारिकेरफलान्यष्टावेकं रामाय दापयेत् ।। आचार्यं वरयेत्तत्र वेदशास्त्रविशारदम् ।। १८ ।। ब्रह्मादिऋत्विजां तत्र वरणं कारयेत्ततः ।। मधुपर्केण संपूज्य वस्त्रालङ्कारभूषणैः ।। १९ ।। ऋत्विजः षोडशाष्टौ वा वरयेद्वेदपारगान् ।। स्नात्वा नित्यं विधायादौ पूजयेद्गणनायकम् ।। २० ।। पुण्याहं वाचयित्वा तु पूजयेद्रामचन्द्रकम् ।। ततोऽग्निं च प्रतिष्ठाप्य स्वशाखोक्तविधानतः ।। २१ ।। विष्णुसूक्तेन होतव्यं मूलमंत्रेण वा पुनः ।। नवग्रहांश्च दिक्पालान्मंत्रानुक्त्वा च होमयेत् ।। २२ ।। पुरुषसूक्तेन होतव्याः समिदाज्यं चरुस्तिलाः ।। अष्टोत्तरसहस्रं तु राममंत्रेण होमयेत् ।। २३ ।। होमान्ते पूजनं कुर्याद्रामचन्द्रादिदेवताः पूजयित्वा ततो हुत्वा बलिं पूर्णाहुतिं तथा ।। २४ ।। श्रेयःसंपादनं कुर्यादभिषेकं समाचरेत् ।। रामं नत्वार्चयित्वा च प्रार्थयित्वा पुनःपुनः ।। २५ ।। आचार्यं पूजयेत्पश्चात्सुवर्णैर्वस्त्रधेनुभिः।। प्रतिमां दानमंत्रेण आचार्याय निवेदयेत् ।।२६।। नतोऽस्मि देवदेवेश बहुबुद्धिमहात्मभिः ।। यश्चिन्त्यते कर्मपाशाद्धृदि नित्यं मुमुक्षुभिः ।। २७ ।। मायया गुणमय्या त्वं सृजस्यवासि लुम्पसि ।। अतस्त्वत्पादभक्तेषु त्वद्भक्तिस्तु श्रियोऽधिका ।। २८ ।। भक्तिमेव हि वाञ्छन्ति त्वद्भक्ताः सारवेदिनः ।। अतस्त्वत्पादकमले भक्तिरेव सदास्तु मे ।। २९ ।। संसारामयत-

प्तानां भैषज्यं भक्तिरेव ते ।। सीतासौमित्रिहनुमद्भक्तियुक्तो नरेश्वरः ।। ३० ।। दानेनानेन मे राम भुक्तिमुक्तिप्रदो भव ।। प्रतिमादानसिद्ध्यर्थं शक्त्या स्वर्णं तु दापयेत् ।। ३१ ।। दानं यद्दक्षिणाहीनं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।। ब्राह्मणाञ्छत-साहस्त्रं भोजयेन्मधुसर्पिषा ।।३२।। पक्वान्नैः पायसैः खाद्यैर्लड्डुकैःशर्करान्वितैः ।। ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्याद्भूयसीं दक्षिणां ददेत् ।। ३३ ।। तदन्ते घृतपात्रं च तिलपात्रं च दापयेत् ।। शय्यां च रथदानानि दशदानानि शक्तितः ।। ३४ ।। अशक्तश्चेत् स्वर्णमेकं दत्त्वा रामं नमेत् पुनः ।। तिलकं करायेत्पश्चादभिषिक्तः सुपल्लवैः ।। ३५ ।। द्विजेभ्य आशिषो गृह्य नत्वा स्तुत्वा विसर्जयेत् ।। उमामहे-श्वरौ पूज्यौ भोजयेद्वटुकं तथा ।। ३६ ।। कुमारीणां शतं भोज्यं योगिराजं च भोजयेत् ।। क्षेत्रपालबलिं दत्त्वा ध्यात्वा रामं सदा जपेत् ।। ३७ ।। ब्रह्मादिभिस्तु तत्पुण्यं वक्तुं शक्यं न किञ्चन ।। अश्वमेधसहस्त्रस्य वाजपेयशतस्य च ।। ३८ ।। एकेन रामनाम्ना तु तत्फलं लभते नरः ।। नारी वा पुरुषो वापि शूद्रो वाप्यधमो नरः ।। रामनाम्ना तु मुक्तास्ते सत्यंसत्यं वरानने ।। ३९ ।। मूलेकौल्पद्रुमस्याखिल-मणिविलसद्रत्नसिंहानस्थं कोदण्डं धारयन्तं ललितकरयुगेनार्पितं लक्ष्मणेन ।। वामाङ्कन्यस्तसीतं भरतधृतमहामौक्तिकच्छत्रकान्तं प्रीत्या शत्रुघ्नहस्तोद्धृत-चमरयुगं रामचन्द्रं भजेऽहम् ।। ४० ।। वन्देऽनिशं महेशानचण्डकोदण्डखण्डनम् ।। जानकीहृदयानन्दवर्धनं रघुनन्दनम् ।। ४१ ।। इति श्रीभ० उमामहेश्वरसंवादे० रामनामलेखनोद्यापनंसंपूर्णम् ।।

रामनाम लेखनव्रत–यह रामनवमीसे लेकर जिस किसी भी समय कर लेना चाहिये । आचमन प्राणायाम करके मास पक्ष आदिकोंको कह, सारे पापोंका नाश चाहनेवाला एवं विष्णुलोक मुझे मिले ऐसी इच्छावाला श्रीरामचन्द्रजीकी प्रसन्नताके लिये रामनामको लिखूंगा ऐसा संकल्प करके लिखित रामनामकी पूजा नाममंत्रसे सोलहों उपचारोंसे करनी चाहिये ।। कथा और उद्यापन–पार्वती बोलीं कि, हे जगत्प्रभो ! मैं धन्य हूं आपने मुझपर पूर्ण कृपाकी है आपकी परिपूर्ण अनुकंपासे मेरी संदेहकी गांठों आपही खुल गयी ।।१।। आपके मुखसे रामकी कथारूपीअमृत रसायन निकली । उस भव-तापहारिणीको पीते २ मेरा मन तृप्त नहीं होता ।।२।। मैंने श्रीरामका अमृत-नाम संक्षेप से सुना है । इस समय मैं विस्तारके साथ खुलासा सुनाना चाहती हूं ।।३।। श्रीमहादेव बोले कि, हे देवि ! गुह्यसे भी परममहागुह्य कहूंगा आपसुनें, इसको सुननेसे परमसिद्धि दीर्घ आयु और पुत्र संपत्ति प्राप्त होती है ।।४।। जो रामनाम लिखेगा उसका एक एक अक्षर पुरुषोंके महापातकोंको लक्षकोटि शततक नष्ट करता है ।।५।। हे पार्वति ! सकाम हो वा निष्काम हो जो रामनाम लिखता है वो यहां सुख पाता है तथा अन्तमें परमपदको पाजाता है ।।६।। आदि अन्त और मध्यमें व्रतका उद्यापन करना चाहिये । क्योंकि विना उद्यापनके फल सिद्धि नहीं होती ।।७।। इस कारण सारे प्रयत्नसे नामका उद्यापन कर । पार्वती बोलीं कि, हे देव देव ! हे भक्तोंपर दया करनेवाले ! हे देवदेवेश ! मैं आपको प्रणाम करती हूं ।।८।। हे प्रभो ! विस्तारके साथ नामका उद्यापन करिये । श्रीशिव बोले कि, हे देवि ! आप सावधान होकर सुने ।।९।। मैं आपकी भक्ति और आपपर अनुग्रह होनेसे मैं नामका उद्यापन कहता हूं । लक्ष्मण सहित श्रीराम चन्द्रजीकी सोनेकी प्रतिमा बनवाये ।।१०।। उसके

चौथे हिस्से की हनुमान्‌जीकी प्रतिमा बनावे । श्रीरामकी प्रतिमामें ८ पल सुवर्ण होना चाहिये ।।११।। यदि सामर्थ्य न हो तो पलकी अथवा पलार्धकी ही बनवाले श्रीरामकी प्रतिमाको बनवातीबार कृपणता नहीं करनी चाहिये ।।१२।। सोलह माषका चांदीका आसन बनवावे, पीतवस्त्रसे वेष्टित-करके चावलोंके ऊपर रख दे ।।१३।। वे चार द्रोणतण्डुल होने चाहिये जिनपर कि, आसन रखाजाय। घरके पवित्र देशमें अथवा तीर्थमें मण्डप करना चाहिये ।।१४।। आमके पल्लवके तोरण बनाकर चारों द्वारोंपर बाँध दे । गोबरसे लिपीहुई भूमिमें सर्वतोभद्र बनावे ।।१५।। अनेक रङ्गोंसे रंगेहुए सात धानोंसे सुशोभन बनाये पूजादि दिशाओंमें आठ सावित शुभ कलशों की स्थापना करे ।।१६।। बीचमें एक कुम्भ चावलोंके ऊपर स्थापित करे । उसे शुद्ध पानीसे भरदे । पञ्चरत्न और पल्लव उसमें पटकदे ।।१७।। एक एक कलशपर एक एक नारियल स्थापित करे । एक नारियल रामचन्द्रजीकी भेंट करे । सदांही वेदशास्त्रोंको जाननेवाले आचार्यका वरण करे ।।१८।। वहांही ब्रह्मासे लेकर बाकी सब ऋत्विजोंका वरण करे । उनकी पूजा मधुपर्क और वस्त्र अलंकरोंसे करे ।।१९।। वे ऋत्विज १६ वा आठ होने चाहिये, सब वेद शास्त्रके पारंगत हों । स्नान और नित्य कर्मकरके पहिले गणेशजीका पूजन करना ।।२०।। पुण्याहवाचन कराके रामचन्द्रजीकी पूजा करे पीछे अपने शाखाविधानके अनुसार अग्निका प्रतिष्ठापन करके ।।२१।। विष्णुसूक्तसे अथवा मूलमंत्रसे हवन करना चाहिए । नवग्रह और दिक्पालोंके मन्त्रोंको भी कहकर उनका हवन करे ।।२२।। पुरुषसूक्तसे समिद आज्य चरु और तिलोंका हवन करे । एक हजार आठ बार राममंत्रसे हवन करे ।। २३ ।। होमके बाद रामचन्द्रादि देवताओं-का पूजन करना चाहिये । पीछे पूर्णाहुति और बलि करनी चाहिए ।।२४।। पीछे श्रेयका संपादन और अभिषेकका आरम्भ करे । रामकी वारम्बार नमस्कार अर्चन और प्रार्थना करके ।।२५।। पीछे सुवर्ण वस्त्र और धेनुसे आचार्यका पूजन करे ! दानके मन्त्रसे आचार्यको देदे ।।२६।। हे देवदेवेश ! मैं आपके लिए प्रणाम करता हूं कर्मपाशोंको काटनेके लिए बड़ी बुद्धिवाले महात्मा जो कि, मोक्ष चाहते हैं वे सब आपकोही हृदयमें याद करते रहते हैं ।।२७।। आप गुणमयी मायासे उत्पत्ति स्थिति और प्रलय करते हैं । इस कारण आपके चरणकमलोंके भक्तोंमें आपकी प्रीति लक्ष्मीजीसे भी अधिक है ।।२८।। सारको जाननेवाले आपके भक्त आपकी भक्तिही चाहते हैं । इसीप्रकार आपके चरण-कमलोंमें मेरी सदाही भक्ति हो ।।२९।। संसारकी व्याधियोंसे तपे हुए पुरुषोंके लिए आपकी भक्तिही दवाई है । सीता लक्ष्मण और हनुमान् इनकी भक्तिके सहित आप नरेश्वर हैं ।।३०।। हे राम ! इस दानसे मुक्ति और भुक्ति देनेवाले हो जाओ । प्रतिमाके दानकी सिद्धिके लिए शक्तिके अनुसार सोना और दे ।।३१।। क्योंकि, जो दान दक्षिणासे हीन होता है वह भी निष्फल होता है । एक हजार एक सौ ब्राह्मणोंको मधु और घृतसे भोजन करावे ।।३२।। ईसमें पक्वान्न पायस खाद्य लड्डु और शर्करा रहनी चाहिए । ऋत्विजोंको दक्षिणा दे जहांतक हो उसके बहुतसी दक्षिणा होनी चाहिए ।।३३।। उसके अन्नमें तिलपात्र और घृतपात्र दे शय्या और रथदानादि दश दान करे ।।३४।। यदि शक्ति न हो तो सोनामात्रही देकर रामको नमस्कार करले । अच्छे पल्लवोंसे अभिषिक्त होकर तिलक करावे ।। ३५ ।। ब्राह्मणोंसे आशीर्वाद लेकर नमस्कार स्तुति कहके विसर्जन कर देना चाहिए । उमा और महेश्वरकी पूजा करे, वटुकको भोजन करावे ।। ३६ ।। एक सौ कुमारी और योगिराजको भोजनकरावे, क्षेत्रपालको बलि देकर रामका ध्यान करके मन्त्रको जपता रहे ।।३७।। ब्रह्मादिक देव इस पुण्यको कह नहीं सकते । एक हजार अश्वमेध तथा एकसौ बाजपेयका जो फल है।।३८।। वह मनुष्य एक इस रामनामसे ही प्राप्त कर लेता है। स्त्री हो या पुरुष हो अथवा शूद्र हो या और कोई अधम प्राणी हो हे वरानने ! मैं सत्य कहता हूँ वे सब रामनामसे ही मुक्त हो जाते हैं ।।३९।। मैं उन श्रीरामचन्द्र देवका ध्यान करता हूं जिनपर प्रेमसे शत्रुघ्न दोनों हाथोंसे चमर ढुला रहे हैं, भरतजी कीमती मौक्तिकोंका छत्र रख रहे हैं जिससे उनकी शोभा बढ़ गयी है, बायें अङ्गमें सीताजी–

बैठी हुई हैं, लक्ष्मणजी दोनों सुकुमार हाथोंसे धनुष धारण कर रहे हैं जिसे कि आप धारणकर रहे हैं। कल्प-वृक्षके मूलमें ऐसे सिंहासनपर विराज रहे हैं, जिसमें सब तरहकी श्रेष्ठ मणि लगी हुई हैं तथा जिसका निर्माण रत्नोंसे ही हुआ है एवं गजबकी जिसकी चमक है ।।४०।। महेशके चण्ड धनुषको तोड़नेवाले जो जानकीके हृदयको आनन्द बढ़ा देनेवाले भगवान् राम हैं उनकी रात दिन बन्दना करता हूं ।।४१।। यह श्रीभविष्य-पुराणके उमामहेशके संवादका रामनामके लिखनेका उद्यापन पूरा हुआ ।।